UGHI हिन्दी
UGHI-101/ UGHI-01/CSSHI-01
हिन्दी गद्य

हिन्दी गद्य का विकास

हिन्दी गद्य का विकास– गद्य साहित्य, हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि, हिन्दी गद्य का विकास (विकास के कारण, प्रारंभिक गद्य लेखन, अंग्रेजी की भाषा– नीति) भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रेमचन्द्र और उनके बाद।

हिन्दी गद्य की विविध विधाएँ– साहित्य, नाटक (नाटक का वर्गीकरण, रेडियो नाटक, दूरदर्शन नाटक), एकांकी, उपन्यास, कहानी लघुकथा, निबन्ध, आलोचना, रेखाचित्र और संस्मरण, आत्मकथा और जीवनी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज।

हिन्दी कहानी

हिन्दी कहानी : स्वरूप और विकास– कहानी का रचनागत वैशिष्ट्य (कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प प्रतिपाद्य), कहानी के भेद, हिन्दी कहानी का विकास।

'उसने कहा था' (चन्द्रधर शर्मा' गुलेरी') : वाचन कहानी का वाचन, कहानी का सार, कहानी की सन्दर्भ सहित व्याख्या।

'उसने कहा था' : विश्लेषण और मूल्यांकन– कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, परिवेश, संरचना (शैली, भाषा और संवाद), मूल्यांकन (रचनाकार की दृष्टि और कहानी का प्रतिपाद्य, शीर्षक की उपयुक्तता)।

'शतरंज के खिलाड़ी' (प्रेमचन्द्र) : वाचन एवं विश्लेषण – कहानी का वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथावस्तु, चरित्र चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प (शैली, संवाद, भाषा) मूल्यांकन

'आकाश–दीप' (जयशंकर'प्रसाद') : वाचन

'आकाश दीप' : विश्लेषण और मूल्यांकन – कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प (शैली, भाषा और संवाद)– मूल्यांकन।

'परदा' (यशपाल) : वाचन एवं विश्लेषण– वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प (शैली, भाषा, संवाद), मूल्यांकन।

'अकेली' (मन्नू भंडारी) : वाचन एवं विष्लेषण – वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, मूल्यांकन।

हिन्दी उपन्यास (पहला भाग)

हिन्दी उपन्यासः स्वरूप और विकास– उपन्यास का रचनागत वैशिष्ट्य (कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य), उपन्यास के भेद, हिन्दी उपन्यास का विकास (प्रेमचन्द्र पूर्व, प्रेमचन्द्र युगीन एवं प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यास)

'निर्मला' (प्रेमचन्द्र) वाचन एवं व्याख्या–I- उपन्यास का वाचन, कथसार, व्याख्या।

'निर्मला' (प्रेमचन्द्र) वाचन एवं व्याख्या– II- उक्तवत।

हिन्दी उपन्यास (दूसरा भाग)

'निर्मला' : कथावस्तु– कथावस्तु (कथावस्तु के प्रकार, गुण, विकास की पद्धति), 'निर्मला' की कथा (आरंभ, विकास, परिणति), 'निर्मला' की कथावस्तु की विशेषताएँ।

'निर्मला' : चरित्र–चित्रण – चरित्र–चित्रण की विधियाँ, चरित्र–चित्रण के गुण, उपन्यास के पात्र।

' निर्मला' परिवेश, संरचना शिल्प

'निर्मला' प्रतिपाद्य एवं प्रेमचन्द्र का वैषिष्ट्य– मूल्यांकन (प्रतिपाद्य, शीर्षक की सार्थकता), प्रेमचन्द्र का वैशिष्ट्य (प्रेमचन्द्र के उपन्यास, औपन्यासिक पात्र, देशकाल–चित्रण, भाषा, शिल्प सोद्देश्यता)

हिन्दी एकांकी (पहला भाग)

हिन्दी एकांकी : स्वरूप और विकास– दृश्य विद्या का विशिष्ट स्वरूप, एकांकी का संरचनागत वैशिष्ट्य (कथानक, पात्र, संवाद तथा भाषा– शैली परिवेश अथवा देशकाल, अभिनेयता या मंचीयता, प्रतिपाद्य अथवा उद्देश्य), हिन्दी एकांकी का विकास, एकांकी के भेद, रेडियो नाटक।

' कौमुदी महोत्सव' (डॉ0 राम कुमार वर्मा) : वाचन।

' कौमुदी महोत्सव' : विष्लेषण और मूल्यांकन– कथानक (आरंभ , विकास, परिणति, संकलन–त्रय), चरित्र–चित्रण (चन्द्रगुप्त, चाणक्य, वसुगुप्त), परिवेश, संरचना शिल्प (भाषा, शैली, संवाद), अभिनेता, मूल्यांकन।

'रीढ़ की हड्डी' (जगदीश चन्द्र माधुर) : वाचन

हिन्दी एकांकी (दूसरा भाग)

'रीढ़ की हड्डी' : विश्लेषण और मूल्यांकन– कथानक (आरम्भ, विकास, परिणीति,) चरित्र–चित्रण (उमा, गोपाल प्रसाद) परिवेश, संरचना शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

'जोंक' (उपेन्द्रनाथ 'अश्क') : वाचन एवं विश्लेषण– वाचन, सार, सप्रसंग व्याख्या, कथानक, पात्र, परिवेश, संरचना–शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

'संस्कार और भावना' (विष्णु प्रभाकर) : वाचन एवं विश्लेषण– वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथानक पात्र, परिवेश, संरचना–शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

'संस्कार और भावना' (विष्णु प्रभाकर) : वाचन एवं विष्लेषण– वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथानक, पात्र, परिवेश, संरचना शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

हिन्दी नाटक

हिन्दी नाटकः स्वरूप और विकास– साहित्य की अन्य विधाएँ और नाटक, नाटक और रंगमंच का सम्बन्ध, नाटक और उपन्यास नाटक के तत्व (कथावस्तु, पात्र, परिवेश, भाषा, शैली और संवाद, अभिनेयता और मंचीयता, प्रतिपाद्य अथवा उद्देश्य), नाटक के प्रकार, हिन्दी नाटक का विकास।

'ध्रुवस्वामिनी' (जयशंकर 'प्रसाद') वाचन एवं व्याख्या

'ध्रुवस्वामिनी' : कथानक– कथावस्तु के स्रोत, नाटक का कथा– सार, कथावस्तु (आरंभ, विकास, परिणति), कथावस्तु का विश्लेषण (अंक–दृश्य योजना, दृश्य और सूच्य घटनाएँ, आधिकारिक और प्रासंगिक कथावस्तु, विविध नाटकीय युक्तियों का प्रयोग, संकलन–त्रय, कथावस्तु विकास की परम्परागत प्रविधियाँ, कार्य–व्यापार की तीव्रता और आद्योपान्त संघर्ष)।

'ध्रुवस्वामिनी' : चरित्र–चित्रण – चरित्र–चित्रण की शिल्पविधि, प्रसाद जी की पात्र–सृष्टि की विशेषताएँ, 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के पात्र।

'ध्रुवस्वामिनी' : कथानक– कथावस्तु के स्रोत, नाटक का कथा–सार, कथावस्तु (आरंभ, विकास, परिणीति), कथावस्तु का विश्लेषण (अंक–दृश्य योजना, दृश्य और सूच्य घटनाएँ, आधिकारिक और प्रासंगिक कथावस्तु, विविध नाटकीय युक्तियों का प्रयोग, संकलन–त्रय, कथावस्तु विकास की परम्परागत प्रविधियाँ, कार्य–व्यापार की तीव्रता और आद्योपान्त संघर्ष)।

'ध्रुवस्वामिनी' : चरित्र–चित्रण – चरित्र चित्रण की शिल्पविधि, प्रसाद जी की पात्र– सृष्टि की विशेषताएँ, ध्रुवस्वामिनी' नाटक के पात्र।

'ध्रुवस्वामिनी' : परिवेश तथा संरचना –शिल्प– ऐतिहासिक नाटक और परिवेश, 'ध्रुवस्वामिनी' का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आधुनिक परिवेश, 'ध्रुवस्वामिनी' का संरचना– शिल्प।

'ध्रुवस्वामिनी' : प्रतिपाद्य और अभिनेयता– प्रतिपाद्य (नारी जागरण की चेतना, अयोग्य और भ्रष्ट शासन से मुक्ति, यथार्थपरक जीवन–दृष्टि), 'ध्रुवस्वामिनी की अभिनेयता।

'ध्रुवस्वामिनी' : रचना दृष्टि की नवीनता और सार्थकता – परंपरा का अनुकरण और नया प्रयोग, समस्या नाटक के रूप में ' ध्रुवस्वामिनी', नाटक का शीर्षक, मूल्यांकन।

हिन्दी निबन्ध

हिन्दी निबन्ध : स्वरूप और विकास– निबन्ध का रचनात्मक वैशिष्ट्य अर्थ और परिभाषा, विचारात्मक एवं भावात्मक आधार, लेखक का व्यक्तित्व, शैली, भाषा निबन्ध के भेद, हिन्दी निबन्ध का विकास।

बातचीत (बालकृष्ण भट्ट) : वाचन एवं विश्लेषण – निबन्ध का वाचन, सार, व्याख्या, अन्तर्वस्तु, लेखकीय व्यतिव की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य।

मित्रता (रामचन्द्र शुक्ल) : वाचन

मित्रता : विश्लेषण एवं मूल्यांकन– अन्तर्वस्तु (विचार पक्ष, भाव पक्ष), लेखकीय व्यतिव की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प (भाषा, शैली) प्रतिपाद्य।

एक था पेड़ और एक था ठूँठ! (कन्हैया लाल मिश्र' प्रभाकर') : वाचन एवं विश्लेषण – वाचन, सार, व्याख्या, अंतर्वस्तु (विचार पक्ष, भाव पक्ष), लेखकीय व्यक्तिव की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प (भाषा, शैली), प्रतिपाद्य।

मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र) : वाचन एवं विश्लेषण– वाचन, सार, व्याख्या अंतर्वस्तु (विचार पक्ष, भाव पक्ष), लेखकीय व्यतिव की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प (भाषा, शैली), प्रतिपाद्य।

व्याख्यात्मक प्रश्न

के प्रश्न पत्र में व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्यक्रम में समाहित सभी साहित्यिक कृतियों– **कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक एवं निबन्धों** से पूछे जाएँगे, जिनका सन्दर्भ और प्रसंग सहित उत्तर देना होगा।

हिन्दी काव्य

आदि काव्य

हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि (अपभ्रंश काव्य का परिचय) – अपभ्रंश : अर्थ और स्वरूप (साहित्यिक भाषा के रूप में अपभ्रंश का विकास), अपभ्रंश काव्य, अपभ्रंश और हिन्दी काव्य का संबंध।

हिन्दी का आदिकाव्य : स्वरूप एवं विकास– आदिकाव्य : अर्थ और स्वरूप (आदिकालीन परिस्थितियाँ, आदिकालीन काव्य का स्वरूप), आदिकाव्य की प्रतिनिधि रचनाएँ (पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो, ढोला मारू रा दूहा, विद्यापति की कविता,अमीर खुसरो की कविता), आदिकाव्य की साहित्यिक प्रवृत्ति, आदिकाव्य की शिल्पगत विशेषताएँ।

भक्तिकाव्य (पहला भाग)

भक्ति काव्य का स्वरूप और विकास – भक्ति काव्य की पूर्व परम्परा, पृष्ठभूमि, भक्ति का स्वरूप, भक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ भक्ति काव्य का शिल्प–विधान भक्तिकाव्य का विकास (ज्ञानाश्रयी, प्रेममार्गी (सूफी), कृष्ण भक्ति, रामभक्ति शाखा)।

कबीर का काव्य– कबीर का रचना–व्यतिव, कबीर काव्य का ज्ञान पक्ष (निर्गुण–निराकार ईश्वर, अवतारवाद का खण्डन, शास्त्र–ज्ञान को चुनौती), कबीर काव्य का सामाजिक पक्ष (धार्मिक बाह्माचार का खण्डन, जाति प्रथा का विरोध, हिन्दू मुस्लिम समन्वय, नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण), कबीर की भक्ति भावना, कबीर काव्य में रहस्यवाद, कबीर काव्य का शिल्प–पक्ष।

जायसी का काव्य – जायसी का रचना व्यतिव, सूफीमत, पद्मावतः वस्तु वर्णन (कथावस्तु, ऐतिहासिकता), पद्मावत में प्रेम–तत्व, जायसी का रहस्यवाद, पद्मावत का शिल्प पक्ष, जायसी काव्य का मूल्यांकन।

मीराबाई– मीराबाई का परिचय (रचनाकार व्यक्तित्व, जीवन–परिचय) विभिन्न सम्प्रदायों का प्रभाव, भक्ति–भावना (मीरा और आंडाल की भक्ति भावना की तुलना, वेदनानुभूति बनाम प्रमानुभूति), गीतिकाव्य धारा, अभिव्यंजना शिल्प, काव्य वाचन एवं व्याख्या, मूल्यांकन।

भक्तिकाव्य (दूसरा भाग)

सूरदास– युग–परिवेश, जीवन परिचय तथा रचनाएँ, भक्ति–भावना एवं दार्शनिक विचारधारा, सूर का भावपक्ष (वात्सल्य, श्रृंगार), अभिव्यंजना पक्ष, वाचन एवं व्याख्या, मूल्यांकन।

गोस्वामी तुलसीदास– तुलसी पूर्व रामकाव्य परम्परा, पृष्ठभुमि, तुलसीदास का परिचय, तुलसी का भाव–पक्ष, दार्शनिक विचार, भक्ति पद्धति, अभिव्यंजना शिल्प, मूल्यांकन, व्याख्या।

रहीम का काव्य– रहीम : जीवन वृत्त, रचनाकार व्यतिव, रहीम और उनकी रचनाएँ, नीति काव्य परम्परा और रहीम, भाव पक्ष, अभिव्यक्ति कौशल, मूल्यांकन।

हिन्दी रीति काव्य

रीतिकाव्य का स्वरूप एवं विकास– रीतिकालीन परिस्थितियाँ, रीतिकाव्य (रीति शब्द की व्याख्या, 'रीतिकाव्य' से तात्पर्य, प्रमुख भेद, प्रवर्तन, नामकरण), रीतिकाव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ।

रीतिबद्ध काव्यः देव एवं पद्माकर– रीतिबद्ध कवि देव एवं पद्माकर, देव का काव्यत्व एवं आचार्यत्व, देव की काव्यगत विशेषताएँ, सन्दर्भ सहित व्याख्या, पद्माकर का काव्यत्व एवं आचार्यत्व, पद्माकर की काव्यगत विशेषताएँ, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

रीतिसिद्ध काव्य : बिहारी – जीवन परिचय (व्यक्तित्व रचनाएँ, दरबारी काव्य परंपरा, रीतिसिद्ध कवि, मुक्तक काव्य / सतसई परम्परा), श्रृंगारिक काव्य, भक्ति और नीति, संरचना शिल्प, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

रीतिमुक्त काव्य : घनानन्द – जीवन परिचय तथा रचनाएँ, भावपक्ष (प्रेम निरूपण, श्रृंगार वर्णन, रूप–सौन्दर्य वर्णन, भक्ति भावना), अभिव्यंजा पक्ष, सन्दर्भ सहित व्याख्या, मूल्यांकन।

आधुनिक काव्य (भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग)

भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य : स्वरूप और विकास– भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि, भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य का विकास (बदरीनारायण चौधरी प्रेमधन, प्रतापनारायण मिश्र, पं0 राधाचरण गोस्वामी, राधाकृष्ण दास), भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य की विशेषताएँ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–पृष्ठभूमि, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : कवि परिचय, भारतेन्दु काव्यः प्रमुख प्रवृत्तियाँ (प्राचीन एवं नवीन), संरचना शिल्प, काव्य वाचन तथा व्याख्या।

द्विवेदी युगीन हिन्दी काव्यः स्वरूप और विकास– युगीन पृष्ठभूमि, द्विवेदी युग (काल निर्धारण और नामकरण, महावीर प्रसाद द्विवेदीः युगकर्ता की शक्तियाँ और सीमाएँ), द्विवेदी युग के प्रमुख कवि (मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शंकर शर्मा, सियाराम शरण गुप्त), द्विवेदी युगीन काव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, द्विवेदीगुगीन काव्य का अभिव्यंजना शिल्प, सारांशः द्विवेदी युगीन काव्य का मूल्यांकन (प्रमुख प्रदेय, सीमाएँ)।

मैथिलीशरण गुप्त – जीवन और साहित्य (युगीन परिवेश और भारतीय नवजागरण, आधुनिक हिन्दी काव्य– चेतना), भाव पक्ष, संरचना शिल्प, काव्य–वाचन, व्याख्या, मूल्यांकन।

रामनरेश त्रिपाठी – युग–परिवेश, जीवन–वृत्त एवं व्यतिव, रचना– संसार, काव्य सौन्दर्य : प्रमुख स्वर, रचना–विधान, : विविध आयाम, राम नरेश त्रिपाठी का योगदान, काव्य–वाचन, व्याख्या।

छायावाद

छायावाद : स्वरूप और विकास – छायावाद की पृष्ठभूमि (युगीन परिस्थितियाँ, साहित्यिक परिवेश), छायावाद का प्रारम्भ, छायावाद के प्रमुख कवि (प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा), छायावाद की अन्तर्वस्तु, छायावाद का रचना–विधान, छायावाद का महत्वः शक्ति और सीमाएँ (ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रासंगिकता)।

जयशंकर प्रसाद – जीवन और व्यतिव, युग परिवेश, रचना–संसार, प्रमुख स्वर, शिल्प विधान।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला – युग परिवेश,जीवन और व्यतिव, सर्जक कृतित्व, निराला–काव्य की अन्तर्वस्तु, निराला–काव्य में सांस्कृतिक–सामाजिक नवजागरण, वाचन एवं व्याख्या, मूल्यांकन।

सुमित्रानन्दन पन्त– रचनाकार व्यतिव, काव्य–चेतना का विकास (काव्यानुभूति, प्रकृति–सौन्दर्य, नारी के प्रति नवीन दृष्टि, जीवन–दर्शन), काव्य–शिल्प, व्याख्या, मूल्यांकन।

महादेवी वर्मा– युग परिवेश, जीवन वृत्त, सृजनात्मक, व्यतिव, काव्य सौन्दर्यः अन्तर्वस्तु, काव्य सौन्दर्यः रचना विधान, छायावादी काव्य और महादेवी वर्मा, वाचन एवं व्याख्या।

प्रगतिवाद

प्रगतिवाद : स्वरूप और विकास– प्रगतिवाद : पृष्ठभूमि, प्रगतिवाद शब्द का प्रयोग और अर्थ, अन्तर्वस्तु, अभिव्यंजना शिल्प, प्रगतिवाद के प्रमुख कवि (नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, गजानन माधन मुक्तिबोध, त्रिलोचन), प्रगतिवाद का महत्व।

केदारनाथ अग्रवाल– जीवन परिचय, कृतित्व, पृष्ठभूमि, काव्य की अर्न्तवस्तु, संरचना शिल्प, काव्यपाठ एवं व्याख्या।

नागार्जुन – पृष्ठभूमि, जीवन–परिचय, कृतित्व, काव्य की अन्तर्वस्तु, संरचना शिल्प काव्य –वाचन, व्याख्या।

प्रयोगवाद और नयी कविता

प्रयोगवाद और नयी कविता : स्वरूप और विकास– पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्प विधान, प्रयोगवादी काव्य का विकास, नयी कविता की पृष्ठभूमि, अर्थ, नयी कविता का विकास।

गजानन माधव मुक्तिबोध – जीवन परिचय, कृतित्व, युगीन पृष्ठभूमि, अन्तर्वस्तु, संरचना–शिल्प, काव्य–पाठ एवं व्याख्या।

भवानी प्रसाद मिश्र– जीवन परिचय, रचनाएँ काव्य संवेदना, काव्य– शिल्प, काव्य वाचन और व्याख्या, मूल्यांकन।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– युग परिवेश, जीवनी, व्यतिव–कृतित्व, काव्य संवेदना, अभिव्यंजना, शिल्प काव्य–वाचन, व्याख्या, मूल्यांकन।

नरेश मेहता – कवि परिचय, व्यतिव, काव्ययात्रा, काव्य संवेदना, अभिवयंजना शिल्प, काव्य वाचन, व्याख्या, मूल्यांकन।

समकालीन कविता : स्वरूप और विकास – स्वरूप और दृष्टि (समकालीनता, तात्काकिता एवं परम्परा, समकालीन परिवेश एवं सर्जना, समकालीन कविता एवं आधुनिकता, समकालीन कविता में यथार्थ से साक्षात्कार), समकालीन कविता और नयी कविता, विशाली परिदृश्य (प्रमुख कवि), समकालीन कविता की काव्यगत अथवा संवेदनागत प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत पवृत्तियॉ, मूल्यांकन।

धूमिल– जीवन–परिचय, कृतित्व, युगीन पृष्ठभूमि, अन्तर्वस्तु, संरचनाशिल्प, काव्य–पाठ, व्याख्या।

प्रबन्ध काव्य

प्रबन्ध काव्य : स्वरूप और विकास – प्रबन्ध काव्य की अवधारणा और आधार, प्रबन्ध काव्य

'कुरूक्षेत्र' (रामधरी सिंह दिनकर) का वाचन– कवि परिचय, कुरूक्षेत्र की सृजन–प्रेरणा और युग–परिवेश, कथासार, वाचन (दूसरा तथा तीसरा सर्ग), सन्दर्भ सहित व्याख्या।

'कुरूक्षेत्र' का वस्तुपक्ष– कथानक के स्रोत अथवा आधार, कथा–संयोजन (इतिहास और कल्पना, वस्तु–व्यंजना, नूतन उद्‌भावनाएँ) चरित्र–चित्रण, प्रकृति और संवेदना, भाव–रस व्यंजना।

'कुरूक्षेत्र' का अभिव्यंजना शिल्प– काव्यरूप और नामकरण, काव्य भाषा, बिम्ब, प्रतीक, अप्रस्तुत योजना, छनद एवं लय।

'कुरूक्षेत्र' का प्रतिपाद्य– परिवेश, केन्द्रीय समस्या, अन्य समस्याएँ (विज्ञान का विनाशकारी प्रभाव, परमधर्म और आपद्धर्म का निर्धारण, बुद्धि और हृदय का सन्तुलन, मूल्यांकन), संदेश।

व्याख्यात्मक प्रश्न

व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्य सामग्री में उद्‌धृत अंशो से ही पूछे जाएँगे। पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनओं से व्याख्यात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनका सन्दर्भ और प्रसंग सहित उत्तर देना होगा।

UGHI-103/UGHI-03/CSSHI-03
हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं साहित्य परिचय

हिन्दी साहित्य के इतिहास की भूमिका

साहित्य और इतिहास का अंतःसंबंध – इतिहास और साहित्य का इतिहास, साहित्येतिहास लेखन के विभिन्न पक्ष (सामग्री संकलन, काल विभाजन और नामकरण, मूल्यांकन), साहित्येतिहास लेखन की विभिन्न पद्धतियाँ, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ।

काल विभाजन और नामकरण की समस्या– आवश्यकता, काल विभाजन और नामकरण का आधार, हिन्दी साहित्य के काल विभाजन की समस्या, नामकरण सम्बन्धी विवाद।

हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि– अपभ्रंश का उद्‌भव और विकास, अपभ्रंश साहित्य का अवलोकन (स्वयंभू, पुष्पदन्त, जैन कवि, बौद्ध सिद्ध काव्य, वीर और श्रृंगार काव्य), अपभ्रंश और हिन्दी साहित्य का संबध (अपभ्रंश और हिन्दी का चरित काव्य, भक्ति काव्य और श्रृंगार काव्य), अभिव्यंजना शिल्प।

आदिकालीन साहित्य

आदिकालीन परिस्थितियों का अध्ययन– आदिकाल : अर्थ एवं स्वरूप, परिस्थितियाँ : अर्थ एवं महत्व, आदिकालीन साहित्य के प्रेरक बिन्दु, आदिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं साहित्यिक), उनका आदिकालीन साहित्य पर प्रभाव।

आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – धर्म संबंधी साहित्य (सिद्ध कवि, नाथ कवि, जैन कवि), चारण कवि, लौकिक साहित्य (अमीर खुसरो, विद्यापति, भविसयत कहा)।

रासो काव्य– व्युत्पत्ति, स्वरूप, प्रमुख रासो कृतियाँ (वीर गाथात्मक, श्रृंगारपरक, धार्मिक एवं उपदेशमूलक रासो काव्य), रासो काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, अभिव्यंजना पक्ष।

भक्तिकालीन काव्य

भक्तिकालीन परिस्थितियों का अध्ययन– भक्तिकाल का अर्थ एवं स्वरूप, ऐतिहासिक प्रेरक बिन्दु, परिस्थियाँ, भक्तिकालीन साहित्यः सामग्री और स्वरूप, भक्तिकालीन साहित्य पर परिस्थितयों का प्रभाव।

भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय– भक्तिकाल का अर्थ एवं स्वरूप, ऐतिहासिक प्रेरक बिन्दु, परिस्थितियाँ, भक्तिकाव्य, सगुण भक्ति काव्य, भक्ति काव्य का महत्व।

भक्तिकाव्य का दार्शनिक आधार– भक्ति, धर्म और दर्शन, भक्ति के विविध रूप, दार्शनिक मतवाद (अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद, पुष्टिमार्गीय भक्ति, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद), अन्य संप्रदाय, भक्ति सम्प्रदायों का प्रदेय।

भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख शाखाएँ

निगुर्ण ज्ञानमार्गी काव्यधारा– सूफी मत और सिद्धान्त, सूफी प्रेमकाव्य परम्परा, भाव व्यंजना और रस, रहस्यवाद, सूफी काव्य में भारतीय अभारतीय तत्व, काव्य रूप और कथानक रूढ़ियाँ, प्रतीकात्मकता, काव्य–भाषा, अलंकार, छन्द।

सदगुण कृष्ण भक्ति काव्यधारा– युग परिवेश, कृष्ण भक्ति काव्य और भक्ति आन्दोलन, हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य से संबंधित कुछ प्रमुख संप्रदाय, हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा, उसमें कृष्ण और राधा का स्वरूप, कृष्ण भक्ति काव्य की कथ्यगत विशेषताएँ, शिल्पगत विशेषताएँ।

सगुण रामभक्ति काव्यधारा– पृष्ठभूमि (युग परिवेश), भक्ति आन्दोलन और सगुण रामभक्ति काव्यधारा, राम लोकनायक रूप, सगुण रामभक्ति धारा में नारी का स्वरूप, भक्ति का निरूपण, जीवन–दर्शन और मानव–मूल्य, लोकमंकल की साधना, अन्य विशषताएँ, सगुण राम काव्यधारा का भाव–सौन्दर्य, अभिव्यंजना सौन्दर्य।

रीतिकालीन काव्य

रीतिकालीन काव्य की परिस्थितियाँ– रीतिकाल : अर्थ एवं स्वरूप, रीतिकाल की परिस्थितियाँ, रीतिकालीन साहित्य एवं कला की स्थिति।

रीतिकालीन काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ– पृष्ठभूमि, 'प्रवृत्ति' से तात्पर्य, रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ, विशेषताएँ (रीति–निरूपण, श्रृंगारिकता, राजप्रशस्ति, भक्ति नीति आदि गौण विशेषताएँ, रीतिमुक्त काव्य, रीति इतर काव्य)।

रीतिबद्ध काव्य तथा रीतिसिद्ध काव्य– 'रीति' शब्द से अभिप्राय, 'रीतिसिद्ध और 'रीतिसिद्ध' का तात्पर्य, रीतिकाल के प्रमुख रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवि तथा उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ, रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के वर्ण्य–विषय, काव्यगत विशेषताएँ।

रीतिमुक्त काव्य एवं अन्य प्रवृत्तियाँ– रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्यधारा, रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि, रीतिमक्त काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, रीतिकालीन काव्य की अन्य प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल का प्रदेय।

आधुनिक हिन्दी साहित्य

आधुनिक युगीन परिस्थितियाँ– आधुनिक युग : स्वरूप एवं स्थिति, नामकरण एवं सीमांकन, परिस्थितियाँ, साहित्य, संगीत एवं अन्य कलाएँ, राष्ट्रीय चेतना का विकास।

आधुनिक युग का वैचारिक आधार – सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि, पाश्चात्य जीवन–दृष्टियाँ, थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना, भारतीय जीवन–दृष्टियाँ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आदर्शवादी जीवन–दर्शन।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरम्भ– पृष्ठभूमि, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, प्रारम्भिक हिन्दी साहित्य का महत्व।

भारतेन्दु युग– पृष्ठभूमि, भारतेन्दु युगीन हिन्दी साहित्य, भारतेन्दु युगीन हिन्दी साहित्य की विशेषताएँ महत्व।

द्विवेदी युग– पृष्ठभूमि, युगीन साहित्यकार, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, महत्व।

आधुनिक हिन्दी काव्य

छायावाद– छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृतित्तयाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख छायावादी कवि।

छायावादोत्तर एवं प्रगतिशील काव्य – छायावादोत्तर काव्य की पृष्ठभूमि, छायावादोत्तर काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख छायावादोत्तर कवि, प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि, प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख प्रगतिवादी कवि, छायावादोत्तर और प्रगतिवादी काव्य का महत्व।

प्रयोगवाद एवं नयी कविता– प्रयोगवाद की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख प्रयोगवादी कवि, नयी, कविता की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, नयी कविता के प्रमुख कवि।

समकालीन हिन्दी काव्य– पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख कवि।

आधुनिक हिन्दी गद्य

कथा साहित्य : कहानी एवं उपन्यास– उपन्यास : पृष्ठभूमि, हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव, विकासः स्वातन्त्र्योत्तर युग, कहानी : पृष्ठभूमि, हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकास, प्रमुख कथाकार।

नाट्य साहित्य– हिन्दी नाटक का उदय, प्रसाद पूर्व हिन्दी नाटक, प्रसाद गुगीन हिन्दी नाटक, प्रसादोत्तर स्वतन्त्रता पूर्व हिन्दी नाटक, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटक, नाटक विधा के विभिन्न रूप, नाटक और रंगमंच।

निबन्ध एवं अन्य गद्य विधाएँ– हिन्दी निबन्ध का विकास, संस्मरण– रेखाचित्र, जीवनी–आत्मकथा, यात्रा साहित्य–रिपोर्ताज।

हिन्दी आलोचना का विकास– शुल्क पूर्व हिन्दी आलोचना, शुल्क युगीन हिन्दी आलोचना, शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना।

साहित्य एवं उसके अंग

साहित्य की परिभाषा एवं प्रयोजन– साहित्य का विशिष्टार्थ, व्युत्पत्ति मूलक अर्थ, वाड्.मय और साहित्य, 'साहित्य' शब्द का इतिहास और काव्य से उसका सम्बन्ध, साहित्य की परिभाषाएँ, समाहारपूर्ण परिभाषा, प्रयोजन और हेतु : पारस्परिक अन्तर, साहित्य का प्रयोजन, समाहार।

रस का अर्थ, उसके विभिन्न अंग एवं काव्य में महत्व – रस का अर्थ, स्वरूप तथा लक्षण, रस निष्पति, रस के भावादि अंग अथवा तत्व, संचारी भावों के संबंधों पर आधारित स्थितियाँ, रस के भेद, रस – मैत्री एवं रस– विरोध, काव्य में रस का महत्व।

शब्द –शक्ति– अर्थ और प्रकार, लक्षणा, व्यंजना– भेदोपभेद एवं विशषताएँ।

बिम्ब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व– बिम्ब : अभिप्राय एवं परिभाषा, काव्यबिम्ब की विशेषताएँ, बिम्ब के आधारभूत प्रेरक तत्व, बिम्ब के भेद, बिम्ब के गुण, प्रतीकः महत्व, प्रतीक, का स्वरूप–विस्तार एवं परिभाषा, प्रतीकवाद, प्रतीकों की विशेषताएँ, वर्गीकरण, प्रयोग, कल्पना : महत्व, स्वरूप और विशेषताएँ, भेद, कल्पना का विस्तार तत्व, बिम्ब के भेद, बिम्ब के गुण, प्रतीक : महत्व, प्रतीक का स्वरूप– विस्तार।

छन्द एवं अलंकार

छन्द एवं उसके भेद–I छन्द शब्द का अर्थ एवं व्युत्पत्ति, परिभाषा एवं स्वरूप , छनद और काव्य का सम्बन्ध एवं प्रयोजन, छनदशास्त्र : व्याख्या और नियम, गति, यति अथवा विरति तथा भंग, चरण, गण, तुग विचार, छनद के प्रकार।

छन्द एवं उसके भेद–II- मात्रिक छनद, वर्णिक छन्द, स्वच्छन्द छन्द, मुक्त छन्द।

अलंकार एवं उसके भेद–I- अलंकार : अर्थ, काव्य में महत्व, प्रमुख भेद, शब्दालंकारों के प्रमुख भेद।

अलंकार एवं उसके भेद–II- अर्थालंकार, अर्थालंकार के अंग, भेद उभयालंकार।

नोट : UGHI-03 में व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

UGHI-104/UGHI-08/ CSSHI-03/PGDFH-02

प्रयोजनमूलक हिन्दी

खण्ड–1

हिन्दी की भाषिक व्यवस्था और उसका मानक रूप

इकाई–1 मौखिक तथा लिखित भाषा
इकाई–2 लिपि– वर्तनी का मानक रूप
इकाई–3 शब्दसंपदा और उसका मानकीकरण
इकाई–4 आधारभूत वाक्य संरचना, भाषिक प्रयोग तथा मानक रूप
इकाई–5 हिन्दी भाषाः मानकीकरण और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया

खण्ड–2

प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप

इकाई–6 सामान्य हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी
इकाई–7 प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रयुक्तियाँ और व्यवहार क्षेत्र
इकाई–8 प्रयोजनमूलक हिन्दी : वाक्य संरचना
इकाई–9 प्रयोजनमूलक हिन्दी : पारिभाषिक शब्दावली

खण्ड–3

कार्यालय हिन्दी – 1

इकाई–10 संविधान में हिन्दी और राजभाषा अधिनियम
इकाई–11 राजभाषाः स्वरूप एवं कार्यान्वयन
इकाई–12 कार्यालय हिन्दी की भाषिक प्रकृति
इकाई–13 हिन्दी की प्रशासनिक शब्दावली और भक्तिव्यक्ति

खण्ड–4

कार्यालय हिन्दी – 2

इकाई–14 प्रशासनिक पत्राचार के विविध रूप
इकाई–15 टिप्पण लेखन
इकाई–16 मसौदा लेखन
इकाई–17 बैठके और प्रतिवेदन
इकाई–18 संक्षेपण/सार लेखन

खण्ड–5

वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा– रूप

इकाई–19 वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा–रूप
इकाई–20 वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली
इकाई–21 पर्याय निर्धारण, शब्द निर्माण और प्रयोग
इकाई–22 वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन

खण्ड–6

प्रयोजनमूलक हिन्दी

इकाई–23 जनसंचार माध्यमः विविध आयाम
इकाई–24 जनसंचार के विविध रूपः भाषिक प्रकृति
इकाई–25 समाचार लेखन और हिन्दी

इकाई–26 विज्ञापन और हिन्दी
इकाई–27 संपादन कला

खण्ड–7

अन्य प्रयुक्तियाँ

इकाई–28 वाणिज्य में हिन्दी
इकाई–29 बैंकिंग प्रणाली में हिन्दी
इकाई–30 रक्षा/सेना में हिन्दी
इकाई–31 विधि/न्याय के क्षेत्र में हिन्दी

DCEHI-101/ UGHI-04

मध्यकालीन भारतीय साहित्य : समाज एवं संस्कृति

भक्ति का अविर्भाव

भक्ति का उदय– भक्ति का अर्थ एवं स्वरूप, भक्ति का उदय, भक्ति मत।

भक्ति आन्दोलन का विकास– भक्ति आन्देलन का आरंभिक उदय, भक्ति आन्दोलनकालीन परिस्थितियाँ, भक्ति आन्दोलन के उदय के कारण, भक्ति आन्दोलन का महतव, भक्ति आन्दोलन का प्रसार और विकास, भक्ति आन्दोलन की सीमाएँ और परिणति।

भक्ति साहित्य का परिचय– भक्ति काव्य की समान्य विशेषताएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, दक्षिणांचल भक्ति काव्य, (तमिल, कन्नड़, तेलुगु एवं मलयालम भक्ति काव्य), पश्चिमांचल भक्ति काव्य (मराठी एवं गुजराती) पूर्वांचल भक्ति काव्य (बंगाल, असमिया, ओड़िया), उत्तरांचल भक्ति काव्य (सिंधी, पंजाबी), हिन्दी भक्ति काव्य, भक्ति काव्य का महत्व।

दक्षिणांचल भक्ति साहित्य (भाग–1)

तमिल भक्ति काव्य (एक) – तमिल भक्ति–काव्य की पृष्ठभूमि , तमिल भक्ति–काव्य के प्रमुख वैष्णव कवि, परियाल्वार : जीवन परिचय एवं कृतित्व, कुलशेखर आल्वार : जीवन परिचय एवं कृतित्व, आण्डालः जीवन परिचय एवं कृतित्व, आल्वार भक्त कवियों की काव्य–अभिव्यक्ति : भाषा, शैली, तमिल भक्ति–काव्य का सामाजिक सन्दर्भ।

तमिल भक्ति काव्य (अप्पर, सुन्दरर तथा मणिक्कवाचकर)– तमिल शिवभक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि, शिवभक्ति के दर्शन का संक्षिप्त परिचय, तमिल भक्ति काव्यों के प्रमुख शैव कवि, सुंदरमूर्ति : जीवन परिचय एवं कृतित्व, मणिक्कवाचकर : जीवन परिचय एवं कृतित्व।

कन्नड़ भक्ति काव्य (बसवेश्वर तथा अक्कमहादेवी) – कन्नड़ भक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि, कन्नड़ भक्ति साहित्य के प्रमुख कवि, बसवेश्वर की सामाजिक चेतना (काव्य–वाचन–भावार्थ), अक्क महादेवी जीवन परिचय एवं कृतित्व (काव्य – वाचन–भावार्थ)।

कन्नड़ भक्ति काव्य (पुरंदरदास तथा कनकदास) – युगीन पृष्ठभूमि, कनकदास का आविर्भाव, कविताएँ (पुरंदरदास, कनकदास)

दक्षिणांचल भक्ति साहित्य (भाग–2)

तेलुगु भक्ति काव्य (एक) – तेलुगु भक्ति काव्य की शैव एवं निगुर्ण धारा, तेलुगु भक्ति काव्य की धार्मिक– सामाजिक पृष्ठभूमि पालकुरिकि सोमनाथः जीवन परिचय एवं रचनाएँ, काव्य–वाचन, वेमनाः जीवन परिचय एवं रचनाएँ, काव्य– वाचन, सोमनाथ एवं वेमना के काव्य का शिल्प पक्ष, मूल्यांकन (महत्व एवं प्रासंगिकता)।

तेलुगु भक्ति काव्य (वैष्णव भक्ति काव्य : राम काव्य और कृष्ण काव्य)– वैष्णव भक्तिकाव्य के प्रतिनिधि कवि, (पोतना–जीवन परिचय, पृष्ठभूमि), काव्य – वाचन, गोनबुद्धा रेड्डी : जीवन परिचय एवं कृतित्व, त्यागराजः जीवन परिचय।

मलयालम भक्ति काव्य (चेरूश्शेरी एवं एषुत्तच्छन)– मलयालम भक्ति साहित्य का संक्षिप्त

पश्चिमांचल भक्ति साहित्य

मराठी भक्ति साहित्य– I : ज्ञानेश्वर, नामदेव – मराठी भक्ति साहित्य का परिचय, ज्ञानेश्वर का जीवन परिचय और रचनाएँ, ज्ञानेश्वर काव्य का सामाजिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष, भक्ति का स्वरूप, ज्ञानेश्वर काव्य का शिल्प पक्ष, नामदेव का जीवन परिचय और रचनाएँ नामदेव

काव्य में अभिव्यक्त समाज, नामदेव काव्य का दार्शनिक पक्ष, शिल्प पक्ष, ज्ञानेश्वर और नामदेव काव्य का मूल्यांकन।

मराठी भक्ति साहित्य : तुकाराम, चोखमेला– तुकाराम का जीवन परिचय और रचनाएँ, तुकाराम काव्य का सामाजिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष, चोखामेला का जीवन परिचय और रचनाएँ, उनके काव्य का समाजिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष, भक्ति भावनाख काव्य–शिल्प, तुकाराम और चोखमेला काव्य का मूल्यांकन।

गुजराती भक्ति साहित्य– I नरसी मेहता, प्रीतमदास, दयाराम – गुजराती भक्ति साहित्य का परिचय, नरसिंह मेहता– जीवन परिचय और रचनाएँ, नरसिंह काव्य का सामाजिक पक्ष, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष, प्रीतमदास–जीवन परिचय और रचनाएँ, प्रीतमदास की भक्ति की विशेषताएँ, दयाराम –जीवन परिचय और दयाराम काव्य का सामाजिक पक्ष, भक्ति भावना।

गुजराती भक्ति साहित्य–II प्रेमानंद, अखोभगत– प्रेमानन्द का जीवन परिचय और रचनाएँ, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष, सामाजिक पक्ष, अखोभगत का जीवन परिचय और रचनाएँ सामाजिक पक्ष, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष।

पूर्वांचल भक्ति साहित्य

बांगला भक्ति साहित्य : चंडीदास और ज्ञानदास– बांगला भक्ति साहित्य का इतिास, बांगला भक्ति साहित्य पर विद्यापति और जयदेव का प्रभाव, चैतन्य और उनका भक्ति आन्दोलन, बांगला भक्ति साहित्य के प्रमुख कवि, चंडीदास : जीवन परिचय और रचनाएँ, चंडीदास के काव्य की विशेषताएँ, भक्ति भावना , शिल्प पक्ष ज्ञानदास : जीवन परिचय और रचनाएँ, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष।

बांगला भक्ति साहित्य : गोविन्ददास और बलराम – भक्ति गीति : बांगला साहित्य की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति, बांगला भक्ति काव्य में कृष्णोपासक काव्य की पृष्ठभूमि, वैष्णव भक्ति आन्दोलन के छः प्रमुख कवि (षड्गोस्वामि), गोविन्ददास : जीवन परिचय और रचनाएँ चैतन्योत्तर युग के श्रेष्ठ कवि गोविन्ददास : जीवन परिचय और रचनाएँ, चैतन्योत्तर युग के श्रेष्ठ कवि गोविन्ददास, प्रेम के उदय और उसके विकास का चित्रण, गोविन्ददास की भक्ति भावना, शिल्प पक्ष, बलराम दास काव्य की विशेषताएँ, शिल्प पक्ष।

असमिया भक्ति साहित्य : शंकरदेव एवं माधवदेव – असमिया भक्ति साहित्य का संक्षिप्त परिचय, कवि परिचय : शंकरदेव एवं माधवदेव, शंकरदेव के काव्य का सामाजिक – सांस्कृतिक पक्ष, शंकरदेव और माधवदेव के काव्य की विशेषताएँ

ओड़िया भक्ति साहित्य : बलराम दास, जगन्नाथ दास, अच्युतानंद दास – ओड़िया भक्ति साहित्य का इतिहास, आड़िया भक्ति आन्दोलन और 'पंचसखा युग', बरलरामदास का जीवन परिचय और रचनाएँ, जगन्नाथ दास और अच्युतानन्द दास का जीवन परिचय और रचनाएँ, पंचसखा काव्य का समाजिक पक्ष, पंचसखाओं की भक्ति भावना, पंचसखाओं की भाषा और समाज पर प्रभाव।

उत्तरांचल भक्ति साहित्य

कश्मीरी भक्ति काव्य – कश्मीरी भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि, उद्भव एवं विकास, दार्शनिक आधार, कश्मीरी भक्ति काव्य में समाज एवं संस्कृति, लंल्लेश्वचरी : जीवन परिचय एवं कृतित्व, शेखुनुरूद्दीन वली : जीवन परिचय एवं कृतित्व, परमानंद : जीवन परिचय एवं कृतित्व।

सिन्धी भक्ति काव्य (शेख फरीद, बुल्लेशाह) – सिंधी सूफी संत काव्य, सिंधी सूफी महाकवि

शाह अब्दुल लतीफ का जीवन और काव्य, ' शाह–जो–रिसालो' के ' सुर लीला चनेसर' में से कुछ बैतों का वाचन एवं व्याख्या, सिंधी सन्त महाकवि चैनराई सामी का जीवन और काव्य, सामी–जा–सलोक में से कुछ श्लोकों का वाचन एवं व्याख्या।

पंजाबी भक्ति काव्य (गुरू नानक देव, गुरू अर्जुन देव व गुरूतेग बहादुर) – पंजाबी भक्तिकाव्यः पृष्ठभूमि (दार्शनिक/सामाजिक), प्रमुख कवि, गुरू नानक देव : काव्य वाचन व काव्यगत विशेषताएँ, गुरू अर्जुन देव : काव्य वाचन व विशेषताएँ, गुरू तेगबहादुर : काव्य वाचन व काव्य की विशेषताएँ।

हिन्दी भक्ति साहित्य (भाग–1)

सिद्ध एवं नाथ साहित्य – सिद्ध संप्रदाय : परिचय, सरहपाः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सरहपा के काव्य प्रतिपाद्य, सरहपा के काव्य का वाचन; नाथ सम्प्रदाय : परिचय, गोरखनाथ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, गोरखनाथ के काव्य का प्रतिपाद्य, गोरखनाथ के काव्य का वाचन।

ज्ञानाश्रयी काव्य एक (कबीर) – मध्यकालीन भक्ति काव्य, भक्ति के भेद, ज्ञानाश्रयी काव्य और कबीर का जीवन परिचय, रचनाएँ दार्शनिक विचारधारा, भक्ति भावना, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

ज्ञानाश्रयी काव्य दो (कबीर) – कबीर काव्य की अन्य विशेषताएँ, कबीर काव्य का सामाजिक पक्ष, काव्य–शिल्प, कबीर काव्य का मूल्यांकन, सन्दर्भ साहित व्याख्या।

ज्ञानाश्रयी काव्य (तीन) रैदास, दादूदयाल तथा सुंदरदास'– पृष्ठभममि, युगीन परिसिीतियाँ; रैदास, दादूदयाल एवं सुन्दरदास का परिचय, काव्यवाचन; रैदास, दादूदयाल तथा सुन्दरदास की वाणी में निरूपति समाज एवं संस्कृति।

प्रेमाश्रयी सूफी काव्य : जायसी, कुतबन, मंझन– प्रेमाश्रयी सूफी काव्य : पृष्ठभूमि दार्शनिक/सामाजिक, प्रमुख कवि, जायसीः काव्य वाचन का काव्य विशेषताएँ, कुतबन : काव्य – वाचन व काव्य विशेषताएँ, कुतबन : काव्य – वाचन व काव्य विशेषताएँ, मंझनः काव्य–वाचन व काव्य विशेषताएँ।

भारत में निर्गुण काव्य की परम्परा– भारत में निर्गुण काव्य की परम्पराः पृष्ठभूमि, भारत में निर्गुण काव्य परम्पराः परिचय एवं विशेषताएँ, प्रेममार्गी सूफी काव्य–परम्पराः विशेषताएँ।

हिन्दी भक्ति साहित्य (भाग–2)

भारत में राम भक्ति साहित्य – भारत में राम भक्ति का दाय और विकास, राम भक्ति साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में राम भक्ति का प्रसार, अन्य भारतीय भाषाओं में राम भक्ति साहित्य, हिन्दी का राम भक्ति साहित्य, राम भक्ति साहित्य और लोक जीवनः सामाजिक और सांस्कृतिक।

रामोपासक कविः तुलसीदास (एक)– तुलसीदास का जीवन परिचय और रचनाएँ, रामोपासक भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि, तुलसी काव्य का सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष, तुलसी काव्य की दार्शनिक चेतना, तुलसी की भक्ति– भावना।

रामोपासक कवि : तुलसीदास – (दो) – तुलसी की मुक्तक एवं प्रबन्ध–रचनाएँ, 'मानस और तुलसी, तुलसी की भावुकताः मार्मिक प्रसंगों की योजना, तुलसी की भावुकताः मानस और व्यापकता के सन्दर्भ में, 'मानस' और तुलसी की चरित्र चित्रण कला, 'मानस' और तुलसी की समन्वयवादी और सारसंग्रही दृष्टि, तुसली साहित्य में अभिव्यक्त समाज, तुलसी–काव्य में अभिव्यक्त संस्कृति, तुलसी काव्य का शिल्प पक्ष।

हिन्दी भक्ति साहित्य (भाग–3)

भारत में कृष्ण भक्ति साहित्य – भारत में कृष्ण भक्ति का उदय और विकास, हिन्दीतर भाषाओं

का कृष्ण भक्ति साहित्य, हिन्दी का कृष्ण भक्ति साहित्य, हिन्दी का सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्ण भक्ति साहित्य, हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य और लोक जीवन, कृष्ण भक्ति साहित्य का अवदान।

कृष्णोपासक कवि सूरदास–I- सूरदास का परिचय, भक्ति काव्य में कृष्णोपासक भक्ति काव्य पृष्ठभूमि, महाप्रभु वल्लभाचार्य, सूरदास के दार्शनिक सिद्धान्त, सूर की भक्ति– भावना।

कृष्णोपासक कवि सूरदास–II- वात्सल्य रस के कवि सूरदास, सूर का श्रृंगार वर्णन, सूर का वियोग श्रृंगार– वर्णन, संस्कृति और समाज, शिल्प पक्ष।

कृष्णोपासक कवि नंददास – जीवन वृत्त, रचनाएँ, नंददास का काव्य : अन्तर्वस्तु, नंददास का काव्य : अन्तर्वस्तु, नंददास का काव्य– रूप, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

कृष्णोपासक कवयित्री मीरा– जीवन वृत्त, मीरा की रचनाएँ, मीरा काव्य : अन्तर्वस्तु, काव्य– रूप सन्दर्भ सहित व्याख्या।

कृष्णोपासक कवि रसखान – रसखानः जीवन और साहित्य, काव्य–वाचन, रसखान की भक्ति–भावन, रसखान की सौन्दर्यानुभूति, रसखान का प्रेम–तत्व–निरूपण, रसखान का संदेश, रसखान की कवित्व–शक्ति, कृष्ण भक्ति काव्य धारा में रसखान का स्थान।

नोट :– UGHI-04 में व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

DCEHI-102/UGHI-06/ PGDT-05/CSSHI-06

हिन्दी भाषा : इतिहास और वर्तमान

भारत की भाषाएँ और हिन्दी

भाषा की परिभाषा– भाषा–संप्रेषण के रूप में, भाषा – सामाजिक व्यवहार के रूप में भाषा– संरचना के रूप में।

भारतीय भाषाएँ और भारोपीय परिवार – विश्व की भाषाएँ तथा भाषा परिवार, भारोपीय परिवार, भारत– ईरानी शाखा, भारोपीय परिवार की विशेषताएँ।

भारतीय आर्य भाषाएँ– भारत के भाषा परिवार (द्रविड़, आस्ट्रिक, चीनी–तिब्बती), भारतीय आर्य भाषाएँ : एक विहंगम दृष्टि, भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण (ग्रियर्सन, डॉ0 चटर्जी, तुलना), भारतीय आर्य भाषाओं का परिचय, विशेषताएँ।

हिन्दी भाषा– हिन्दी भाषा का विकास, हिन्दी भाषा का क्षेत्र, हिन्दी का साहित्य, हिनदी भाषा पर समानता, वाक्य संरचना के स्तर पर समानता, भारत की भाषाओं में मूलभूत एकता स्वर।

हिन्दी भाषा का इतिहास

संस्कृति भाषा– संस्कृत साहित्य (वैदिक, लौकिक), संस्कृत भाषा (लौकिक संस्कृत, वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में अन्तर)।

पालि, प्राकृत और अपभ्रंश– मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, आर्य भाषाओं का विकास क्रम।

हिन्दी भाषा का विकास – आदिकाल , मध्यकाल; आधुनिक काल में हिन्दी (खड़ी बोली का विकास, 19वीं सदी के बाद के बाद खड़ी बोली का विकास), हिन्दी और उर्दू की समस्या, भारतेन्दु युग और हिन्दी, शताब्दी में हिन्दी।

हिन्दी भाषा के विविध रूप

हिन्दी भाष के अवधारणा– हिन्दी भाष : स्वरूप और भूमिकाए, हिन्दी भाषा का स्वरूप (विविध बोलियाँ, विविध क्षेत्रीय रूप; हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का सवाल), हिन्दी भाषा की भूमिकाएँ (सम्पर्क भाषा, राजभाषा, प्रयोजनमूलक भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा)।

हिन्दी का जनपदीय आधार– भाषा और बोली, हिन्दी का जनपदीय आधार, हिन्दी की उपभाषाएँ (राजस्थानी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, पहाड़ी) पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी में अन्तर (ध्वनि स्तर, व्याकरणिक स्तर), वर्गीकरण का पुनरावलोकन।

हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ– मारवाड़ी, ब्रज, खड़ी बोली, अवधी, भोजपुरी, मैथिली; बोलियों की सामान्य विशेषताएँ।

हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का सन्दर्भ– हिन्दी, उर्दू, हिन्दूस्तानी, हिन्दी बनाम उर्दू।

बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा– बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा की प्रकृति, कुछ सामान्या अंतर, विशेषताओं की तुलना, उच्चरित भाषा और लिखित भाषा का एक दूसरे पर प्रभाव, बोलचाल की भाषा का लिप्यंकन, लिखित भाषा में उच्चारणात्मक प्रभाव।

हिन्दी के प्रकार्य

हिन्दी के विविध प्रकार्य– भाषा के सामान्य प्रकार्य, भाषा के प्रयोजनमूलक प्रकार्य (राजभाषा हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी), विकास की दिशाएँ विकास में समस्याएँ, अन्य प्रमुख कार्य।

हिन्दी का प्रयोजनमूलक स्वरूप– प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य, प्रयुक्ति की संकल्पना, प्रयुक्ति का आधार, हिन्दी की प्रयुक्तियाँ और प्रयोजनमूलक हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी जानने की आवश्यकता, प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप (वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में हिन्दी, सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में हिन्दी वैज्ञानिक और तकनीकी हिन्दी, कार्यालयी हिन्दी, विधि के क्षेत्र में हिन्दी, सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में हिन्दी, संचार माध्यमों में हिन्दी, विज्ञापन के क्षेत्र में हिन्दी), प्रयोजनमूलक हिन्दी और सामान्य हिन्दी में अन्तर, प्रयोजनमूलक हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी में अन्तर।

सम्पर्क भाषा हिन्दी और हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप– सम्पर्क भाषा से तात्पर्य, कौन– सी भाषा सम्पर्क भाषा हो सकती है? हिन्दी सम्पर्क भाषा क्यों? सम्पर्क भाषा और राष्ट्रभाषा : हिन्दी का सन्दर्भ , संपर्क भाष हिन्दी के विविध क्षेत्र, हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप, सम्पर्क भाषा हिन्दी के सरलीकरण का प्रश्न, हिन्दी के कृतिम रूप से विकास का प्रश्न, सम्पर्क लिपि के रूप में देवनागरी, सम्पर्क भाषा हिन्दी के विकास में अनुवाद का महत्व।

हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ – विदेशों में हिन्दी भाषी, अन्य देशों में हिन्दी, विदेशों में हिन्दी का प्रयोजन पक्ष, विदेशों में हिन्दी शिक्षण की स्थिति विदेशों में हिन्दी भाषा का स्वरूप।

शिक्षा में हिन्दी

पाठ्यचर्या में भाषा– स्कूली शिक्षा में भाषा, त्रिभषा सूत्र, भाषा के विविध नाम (नामों का भाषा वैज्ञानिक महत्व, शिक्षाशास्त्रीय महत्व), त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन, विभिन्न राज्यों में त्रिभाषा की स्थिति।

माध्यमिक शिक्षा में हिन्दी – त्रिभाषा सूत्र में हिन्दी शिक्षण, विभिन्न राज्यों में हिन्दी शिक्षण की स्थिति, विधि का सवाल (पाठ्य सामग्री का निर्माण, प्रशिक्षण)।

उच्च शिक्षा में हिन्दी – उच्च शिक्षा का स्वरूप, उच्च शिक्षा में भाषाः स्वरूप और संकल्पना, भाषा शिक्षा की प्रयोजनपरक दृष्टि, भाषा उन्मुख पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रमों का स्वरूप।

शिक्षा माध्यम के रूप में हिन्दी– शिक्षा माध्यम का महत्व, शिक्षा माध्यम का राष्ट्रीय सामाजिक जीवन से सम्बन्ध, हिन्दी शिक्षा का माध्यम क्यों? भारतीय हिनदी शिक्षा व्यवस्था की ऐतिहासकि पृष्ठभूमि, स्वाधीन भारत की शिक्षा माध्यम संबंधी नीति, शिक्षा माध्यम निर्धारण और कार्यान्वयन, हिन्दी माध्यम की पाठ्य सामग्री का निर्माण, हिन्दी माध्यम सामग्री निर्माण का भाषिक पक्ष, परीक्षा का माध्यम, मूल्यांकन : सीमाएँ और संभावनाएँ।

शैक्षिक सामग्री – भाषा शिक्षण सामग्री, भाषा शिक्षण सामग्री के प्रकार, उचित विधि का चयन, भाषा शिक्षण में दृष्य श्रव्य साधन, भाषा उन्मुख पाठ्यक्रम, सामग्री निर्माण के अभिकरण, अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, प्रशिक्षण व्यवस्था।

कार्यक्षेत्र में हिन्दी– कार्यक्षेत्र परिभाषा और क्षेत्र विस्तार सेवाएँ , भाषा सम्बन्धी अन्य क्षेत्रः संभावनाएँ, निजी क्षेत्र में भाषा स्वीकृति का सवाल और उपाय।

संविधान में हिन्दी

संविधान में हिन्दी सम्बन्धी उपबन्ध– स्वतन्त्रता के समय भारत में भाषा का मसला, संविधान और हिन्दी, शासन के अंग और भाषा राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा, विशेष निर्देश।

संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार कार्रवाई– राजभाषा आयोग, संसदीय समिति का गठन, राष्ट्रपति का आदेश, 1960; अधिनियम की ओर।

राजभाषा अधिनियाम और आदेश – राजभाषा अधिनियम (राजभाषा अधिनियम 1963 का मूल रूप, उक्त अधिनियम का विवेचन), राजभाषा नियम (राजभाषा नियम 1979 का मूल रूप , उक्त नियम का विवेचन)।

राजभाषा के विकास के विविध आयाम– तीनों अंगों में भाषा (न्यायांग में राजभाषा, कार्यांग में राजभाषा), राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन, हिन्दी के प्रचार–प्रसार का कार्य।

विकास की दिशाएँ

आधुनिक सन्दर्भों के लिए हिन्दी भाषा का विकास– भाषा की नीति का सवाल, भाषा नियोजन, भाषा विकास, (प्रयोजन के क्षेत्र, विकास की दिशाएँ)।

हिन्दी का आधुनिकीकरण– भाषा का प्रयोजन विस्तार (राजभाषा, शिक्षा की भाषा, प्रसार का क्षेत्र) भाषा का कोड विस्तार (ध्वनि और लिपि में कोड विस्तार, शब्दावली, नई अभिव्यक्तियाँ, यांत्रिक सुविधाएँ) आधुनिकीकरण के आवश्यक कारक, आधुनिकीकरण की समस्याएँ।

मानक हिन्दी और मानकीकरण की समस्या– मानक भाषा और मानकीकरण, मानकीकरण का औचित्य, मानकीकरण का स्वरूप, मानकीकरण के उपाय और कार्यान्वयन, निदेशालय द्वारा मानकी करण के सुझाव (देवनागरी वर्णमाला का मानकीकरण, हिन्दी की वर्तनी का मानकीकरण।

हिन्दी भाषा में यांत्रिक साधन – यांत्रिकीकरण क्या है?, तार, मुद्रण (टंकण, व्यावसायिक मुद्रण, कक्ष मुद्रण), कम्प्यूटर और हिन्दी।

DCEHI-103 /UGHI-05

आधुनिक भारतीय साहित्य : राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण

नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन

आधुनिक युग की भूमिका– आधुनिक युग का महत्व (सीमांकन, विशिष्टता, मूल संवेदना), आधुनिक युगः राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक सन्दर्भ; आधुनिक युग की मूल संवेदना, मूल्यांकन (आधुनिक युग का अवदान, आधुनिक युग के सन्दर्भ में भारतीय साहित्य की पहचना।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का विकास – स्वाधीनता आन्दोलन की पृष्ठभूमि, स्वाधीनता आन्दोलन का विकास (पहला चरण 1857 से 1905 तक, दूसरा चरण 1905 से 1919 तक, तीसरा चरण, 1919 से 1947 तक) स्वाधीनता आन्दोलन का व्यापक परिप्रेक्ष्य (संस्कृति और समाज, आधुनिक भारतीय साहित्य)।

नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का इतिहास– भारतीय नवजागरण की पृष्ठभूमि, नवजागरण की अवधारणा (नवजागरण और पुनर्जागरण; नवजागरण, पुरूत्थान और सामाजिक सुधार), यूरोपीय नवजागरण की विशेषता, भारतीय परिस्थितियों में नवजागरण की स्थिति (मध्ययुगीनता की समाप्ति औपनिवेशिक पराधीनता और पूँजीवादी विकास, ब्रिटिश शासन और अंग्रेजी शिक्षा), विभिन्न धार्मिक–सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका, राष्ट्रीय चेतना से अभिप्राय, नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का अंतः संबंध।

भारतीय साहित्य में नवजागरण एवं राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति– आधुनिक भारतीय साहित्य की पृष्ठभूमि , आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास, नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन की सामान्य विशेषताएँ, आधुनिक भारतीय साहित्य का उदय, पूर्वांचलीय साहित्य (बंगला, असमिया, उड़िया), पश्चिमांचलीय साहित्य (मराठी, गुजराती), दक्षिणांचलीय साहित्य (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम), उत्तरांचलीय साहित्य (उर्दू, सिंधी, पंजाबी, कश्मीरी), हिन्दी का आधुनिक साहित्य, आधुनिक भारतीय साहित्य का ऐतिहासिक योगदान।

पूर्वांचलीय साहित्य

बांगला साहित्य– I बांगला भाषा : उद्भव और आधुनिक युग (प्राचीन और मध्ययुगीन बांगला : भाषा और लिपि, आधुनिक बांगला), बांगला साहित्य : आधुनिक युग (सत्रहवीं और अटठारहवीं सदी की प्रवृत्तियाँ , बांगला नाटक : नवजागरण, प्राक्– मधुसूदान कवि एवं गद्यकार), माइकेल मधुसूदन दत्त और नवजागरण, बंकिम चन्द्र : राष्ट्रीय चेतना (विविध साहित्यिक विधाओं में योगदान, सामाजिक अवदान), ईश्वरचन्द्र विद्या सागर : नवजागरण (साहित्यकार, वैयाकरण, समाज सुधारक), गिरीश चन्द्र घोष और द्विजेन्द्रलाल रायः नवजागरण।

बांगला साहित्य– II पृष्ठभूमि, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रवीन्द्र साहित्य (राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना),

साहित्यिक विशेषताएँ, काव्य वाचन (भारत तीर्थ; प्रश्न ' संचायिता' के 'परिशेष' से ; आत्मत्राण 'संचयिता' की ' गीतांजलि' से, निर्झरेर स्वप्न भंग), गद्य वाचन हिमालय यात्रा (निबन्ध), काबुलिवाला (कहानी)।

बांगला साहित्य– III शरतचन्द्र सामान्य परिचय (राजनीतिक, सामाजिक परिवेश), शरत् साहित्य की भूमिका (सामाजिक चेतना, ग्रामीण चेतना, धार्मिक चेतना, राजनीतिक चेतना), शरतचन्द्र क उपन्यास/कहानियाँ (महेश और अभागीर स्वर्ण, अभागीर स्वर्ग : विषय वस्तु, चरित्र चित्रण, उद्देश्य, भावार्थ) काजी नजरूल इस्लाम (राष्ट्रीय चेतना : समन्वय; विद्रोही कविताः वाचन, भावार्थ)।

असमिया साहित्य – आधुनिक असमिया साहित्य : युगीन पृष्ठभूमि, आधुनिक चेतना के संवाहक : ईसाइ मिशनरी, प्रेस की स्थापना : अरूणोदय पत्रिका, नवजागरण और असमिया साहित्य, छायावादी साहित्य : बेजबरूवा युग (असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा, राष्ट्रीय चेतना और नवाजागरण, असमिया छायावादी काव्यों की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ), काव्य वाचन (रघुनाथ चौधरी, नलिनीबाला देवी)।

ओड़िया साहित्य – ओड़िया साहित्य की पृष्ठभूमि (भाषा, लिपि, साहित्य), आधुनिक उड़िया साहित्य : पृष्ठभूमि (राधानाथ राय युग, सत्यवादी युग, सबुज युग, प्रगति युग), उड़िया : पद्य, गद्य : नवजागरण (कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध) प्रमुख रचनाकार (फकीर मोहन सेनापति, राधानाथ राय, मधुसूदन राव, गोपबन्धु दास)।

दक्षिणांचल साहितय–I

तमिल साहित्य –I पृष्ठभूमि (तमिल भाषा और साहित्य, सामाजिक – राजनीतिक परिस्थितियाँ), सुब्रह्मण्यम भारती, उनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण के तत्व, सुब्रह्मण्यम भारती की कविता।

तमिल साहित्य –II पृष्ठभूमि (तमिल गद्य का विकास, उपन्यास साहित्य का विकास, कहानी साहित्य का विकास) , उपन्यासकार कल्कि (ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास) कहानीकार पुदुमैपित्तन।

मलयालम साहित्य –I राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण– केरल के सन्दर्भ (मलयालम भाषा और साहित्य), कवि वल्लतोल, उनकी कविता के विभिन्न आयाम, काव्यवाचन (मेरे गुरूदेव–पाठ, भावार्थ, विश्लेषण)।

दक्षिणांचलीय साहित्य –II

तेलुगु साहित्य –I – तेलुगु भाषा और लिपि, पृष्ठभूमि, तेलुगु साहित्य : प्रमुख साहित्यकार; काशीनाथुनि नागेश्वर राव पंतुलु (काव्य साहित्य, भाषा– शिल्प, गद्य, नाटक), वाचन : स्त्री शिक्षा (वीरेशलिंगम पतुलु), वाचन देशभक्ति (स्व0 गुरजाड़ अप्पाराव)।

तेलुगु साहित्य –II – स्वतन्त्रता आन्दोलन में आंध्रों का योगदान, राष्ट्रीय आन्दोलन और तेलुगु साहित्य (तेलुगु कविताः आधुनिक प्रवृत्तियाँ), तेलुगु गद्य साहित्य का विकास (उपन्यास, कहानी, नाटक और एकांकी, आलोचना)।

कन्नड़ साहित्य –I – प्रस्तावना (युगीन परिथितियाँ, राष्ट्रीय चेतना गेय काव्य रूप में), गॉधी युग और स्वाधीनता की चेतना, अन्य प्रसिद्ध कवियों का योगदान (कुवेंपु और नवजागरण), विभिन्न गद्य साहित्य और राष्ट्रीयता (अनुवाद और राष्ट्रीयता, रामस्थली)।

कन्नड़ साहित्य –II – राष्ट्रीय चेतना का विकास, गाँधी साहित्य : अन्य लेखक (प्रभू और राव), अन्य रचनाएँ, प्रमुख जीवनियाँ, नवजागरण का साहित्य (महिला साहित्यकार, नंजनगूड तिरूमलाम्बा), वाचन : तिरूमले राजम्मा ' भारती', कुछ प्रमुख लेखिकाएँ (कल्याणम्मा)।

पश्चिमांचलीय साहित्य

मराठी साहित्य –I – पृष्ठभूमि (मध्युगीनता की समाप्ति, ब्रिटिश शासन और अंग्रेजी शिक्षा), धार्मिक– सामाजिक सुधार आन्दोलन की भूमिका, प्रमुख सुधारक और उनका योगदान (लोकहितवादी– गोपालहरि देशमुख, महात्मा ज्योतिबा फुले, महादेव गोविन्द रानाडे, डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर), नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का अंतः संबंध।

मराठी साहित्य –II – मराठी साहित्य का उदय और विकास, आधुनिक मराठी साहित्य की पृष्ठभूमि, मराठी गद्य साहित्य (निबंध, उपन्यास, नाटक), मराठी पद्य साहित्य (केशवसुत), काव्य वाचन (भावार्थ, विश्लेषण, कविता का उद्देश्य)।

गुजराती साहित्य –I – गुजराती भाषा साहित्य की पृष्ठभूमि, आधुनिक गुजराती भाषा साहित्य का विकास (गद्य, पद्य) गुजराती भाषा साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति (नर्मद, बलवन्तराय क0 ठाकोर)।

गुजराती साहित्य –II – आधुनिक गुजराती साहित्य में गाँधी जी का प्रभाव (उपन्यास और कहानी, काव्य और नाटक, निबन्ध और आत्मकथा), आधुनिक गुजराती सहित्य में नवजारण का विकासक्रम (रामनारायण वि0 पाठक 'द्विरेफ', झवेरचंद मेघाणी)।

उत्तरांचलीय साहित्य

कश्मीरी साहित्य– कश्मीरी साहित्य की पृष्ठभूमि, नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना (काव्य, गद्य) , कश्मीरी साहित्य प्रमुख रचनाकार (गुलाम अहमद महजूर, अब्दुल अहद आजाद, दीनानाथ नादिम, प्रो0 मुहीउद्दीन हाजिमी, प्रेमनाथ परदेसी), कश्मीरी साहित्य : विकास, मूल्यांकन।

सिन्धी साहित्य– सिंधी साहित्य की पृष्ठभूमि, उद्‌भव एवं विकास (सरमस्त, सामी, राय; अंग्रेजी काल, अनुवाद साहित्य), सिन्धी साहित्य प्रमुख रचनाकार (कौडामल चंदनमल खिलनाणी, मिर्जा कालीच वेग, दयाराम गिदूमल, परमानंद मेवाराम), पंजाबी साहित्य : प्रमुख रचनाकार (भाई वीर सिंह, धनीराम चात्रिक, प्रो0 पूरन सिंह, गुरबख्श सिंह, नानक सिंह, मोहन सिंह), पंजाबी साहित्य का मूलयांकन।

उर्दू साहित्य –I – नवजागरण का उर्दू साहित्य, युगीन परिस्थितियाँ (साहित्यिक परिवेश, प्रमुख प्रवृत्तियाँ), प्रमुख साहित्यकार (मौलाना मोहम्मद हुसैन आजाद, मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली)।

उर्दू साहित्य –II – पं. रतननाथ सरशार, इकबाल, पं. बृजनारायण चकबस्त।

हिन्दी साहित्य

युगीन पृष्ठभूमि– उन्नीसवीं सदी का भारत (राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक पृष्ठभूमि), नये युग का उदय, हिन्दी क्षेत्र की विशिष्ट परिस्थितियाँ, आधुनिक हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि, राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण का प्रभाव।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र– जीवन परिचय, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना), नाटक 'अंधेर नगरी' (वाचन, कथासार, उददेश्य)।

मैथिलीशरण गुप्त– पृष्ठभूमि (राष्ट्रीय आन्दोलन, सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि), मैथिलीशरण गुप्त का परिचय (जीवनी साहित्य), कविताएँ (राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक चेतना, नारी चेतना, दलित चेतना) भारत भारती (वाचन, अर्थ विश्लेषण)।

सियारामशरण गुप्त – जीवनी एवं रचनाएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना); पद्य, गद्य (काव्य , गीतिनाट्य , उपन्यास, कहानी, निबन्ध), उन्मुक्त (वाचन, अर्थ विश्लेषण)।

अयोध्या सिंह उपाध्याय ' हरिऔध'– पृष्ठभूमि, जीवनी एवं साहित्यिक रचनाएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, 'प्रिय प्रवास' : वाचन, उद्देश्य।

रामनरेश त्रिपाठी– पृष्ठभूमि (राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिवेश), रामनरेश त्रिपाठी (जीवनी, रचनाएँ), प्रमुख काव्यगत प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रय, सामाजिक चेतना ; नारी चेतना); पथिक, मिलन (वाचन, अर्थ)।

हिन्दी साहित्य

प्रेमचन्द्र – युग परिवेश, जीवनी और कृतित्व, रचना–संसार (उपन्यास, कहानी, अप्राप्य साहित्य, नाटक, जीवनी, लेख संग्रह, बाल साहित्य, चिट्ठी पत्री, अनुवाद), प्रेमचन्द्र साहित्य : नवजागरण का स्वरूप, ' जुलूस' कहानी (कथाकार, मूल्यांकन), 'कर्मभूमि' उपन्यास (वाचन, कथासार मूल्यांकन)।

जयशंकर प्रसाद– पृष्ठभूमि, जीवनी व रचनाएँ, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना); 'चन्द्रगुप्त' : वाचन, कथासार, राष्ट्रीय चेतना, नारी चेतना।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – निराला साहित्य की पृष्ठभूमि, निराला काव्य की अन्तर्वस्तु, रचना–विधान, गद्य रचनाएँ।

सुमित्रानन्दन पन्त – पन्त का जीवन – परिचय एवं काव्ययात्रा, काव्यगत विशेषताएँ, 'परिवर्तन' : वाचन , भावार्थ विश्लेषण।

महादेवी वर्मा– पृष्ठभूमि, जीवनी, साहित्य, महादेवी का गद्य साहित्य : विविध रूप (रेखाचित्र और संस्मरण, निबंध और आलोचना), महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य की विशेषताएँ, नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति।

हिन्दी साहित्य

बालकृष्ण शर्मा ' नवीन'– पृष्ठभूमि, जीवन–परिचय, रचनाएँ, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय चेतना, नवजागरण)।

माखनलाल चतुर्वेदी – स्वतन्त्रता पूर्व हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि, माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन– परिचय , पत्रकारिता और माखनलाल चतुर्वेदी, उनके काव्य का भाव पक्ष, रचना– शिल्प; मूल्यांकन, काव्यवाचन (पाठ), सन्दर्भ सहित व्याख्या।

रामधारी सिंह 'दिनकर' – पृष्ठभूमि, कवि परिचय व रचनाएँ, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना), काव्य वाचन (रश्मिरथी, सामधेनी, हारे को हरिनाम)।

राष्ट्रीयता के विकास में आधुनिक भारतीय साहित्य का योगदान – आधुनिक भारतीय साहित्य

और समाज का संबंध, भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय– सांस्कृतिक मनोभूमिका, भारतीय साहित्य के नवजागरणवादी बोध का स्थायी भावः राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय मुक्ति चेतना की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति (भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता का उदय, नाटक, कथा साहित्य, कविता गद्य : जीवनी, आत्मकथा, निबन्ध, आधुनिक भारतीय साहित्य में व्यक्त राष्ट्रीयता का स्वरूप।

UGHI-05 **में व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।**

DCEHI-104/ UGHI-07

हिन्दी संरचना

ध्वनि संरचना

हिन्दी की वर्णमाला और ध्वनि–वर्ण–सामंजस्य – हिन्दी की वर्णमाला (स्वर, व्यंजन, मात्रा चिह्न, अतिरिक्त चिह्न), वर्ण और ध्वनियाँ, ध्वनि और वर्ण का सामंजस्य, आगत ध्वनियाँ तथा उनके वर्ण , हिन्दी की ध्वनियाँ तथा लेखन व्यावस्था (मात्रा युक्त ध्वनियाँ, संयुक्त ध्वनियाँ, अनुस्वार, अ–लोप)।

हिन्दी के स्वर स्वनिम– स्वनिम की संकल्पना, स्वर और व्यंजन स्वन, हिन्दी के स्वर स्वनिम, हिन्दी– शब्दों में स्वर स्वनिमों के उच्चरित रूप।

हिन्दी के व्यंजन स्वनिम– व्यंजन स्वनों की प्रमुख उच्चारणात्मक, विशेषताएँ, (स्पर्शी, संघर्षी, स्पर्श– संघर्षी, अघोष एवं सघोष व्यंजन, अल्पप्राण एवं महाप्राण व्यजनों के उच्चरित रूप (नासिक्य, मूर्धन्य, महाप्राण, संयुक्त व्यंजन; हिन्दी व्यंजन स्वनिमों के क्षेत्रीय रूप)।

हिन्दी के खंडेतर स्वनिम– खंडीय और खण्डेतर स्वनिम, अक्षर तथा आक्षरिक संरचनाख हिन्दी के खण्डेतर स्वनिम (बालघात; सुर, तान, तथा अनुतान, दीर्घता , अनुनासिकता संगम या संहिता), स्वनिमिक विश्लेषण की उपयोगिता।

रूप रचना

शब्द और रूप– शब्द की संकल्पना (शब्द के तात्पर्य, शब्द तथा पद, शब्द– रूप निर्माण तथा शब्द निर्माण, शब्द वर्ग); रूप, रूपिम संरूप; रूपिमों के भेद– प्रभेद, कुछ विशिष्ट रूपिम (शून्य रूपिम, सर्वादेशी रूपिम, रिक्त रूपिम)।

रूप रचना : रूप सिद्धि – संज्ञा शब्दों की रूप–सिद्धि (व्याकणिक कोटियाँ, बहुवचन रूप, परसर्ग का प्रभाव, रूप–स्वनिमिक परिवर्तन), सर्वनाम शब्दों की रूप सिद्धि (व्याकरणिक कोटियाँ, रूप –रचना, वैकल्पिक रूप, सर्वनाम शब्दों की रूप सिद्धि (व्याकरणिक कोटियाँ, रूप–रचना वैकल्पिक रूप, सर्वनामों में 'ही' अव्यय का प्रयोग), विशेषण शब्दों की रूप सिद्धि (संज्ञा– विशेषण अन्विति, विशेषण शब्दों की रूप–रचना), क्रिया शब्दों की रूप –सिद्धि (व्याकरणिक कोटियाँ, रूप – रचना, वैकल्पिक रूप)।

रूप रचना : व्युत्पादक प्रत्यय – रूप –रचना की संकल्पना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास– तात्पर्य, संयुक्त शब्द तथा समस्त शब्द– संयुक्त शब्दों की संकल्पना, प्रमुख अभिलक्षण, आर्थी संरचना, संयुक्त शब्दों के प्रकार, समस्त वाद की संकल्पना, वर्गीकरण।

अन्य शब्द : ध्वन्यात्मक, अनुकरणात्मक, पुनरूक्त आदि – अन्य शब्द से तात्पर्य, उनका वर्गीकरण, वर्णनात्मक : अन्य शब्द, अवधारणात्मक : अन्य शब्द (अनुकरणमूलक शब्द, रणन, शब्द, पुनरूक्त या द्वित्व शब्द, विस्मयादिबोधक शब्द)।

वाक्य संरचना–I

हिन्दी में पदबंध संरचना– पदबंध का स्वरूप, संरचनात्मक वर्गीकरण, प्रकार्यात्म्क वर्गीकरण (संज्ञा सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं क्रिया–विशेषण पदबन्ध)।

क्रिया पदबन्ध : काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य– वाक्य के घटक (संज्ञा पदबन्ध और क्रिया सहायक क्रिया), व्याकरणिक कोटियाँ, क्रिया पदबन्ध और उसके घटक (मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया), सहायक क्रिया से सम्बन्धित व्याकरणिक कोटयाँ।

वाक्य संचरना : सरल वाक्य – वाक्य स्वरूप, पूर्णांग तथा अल्पांग वाक्य, वाक्य का अर्थगत

वर्गीकरण (कथानात्मक, आज्ञार्थक, मनोवेगात्म्क, नकारात्मक , प्रश्नात्मक वाक्य), वाक्य बनाम सरल वाक्य, सरल वाक्य के प्रकार।

संयुक्त वाक्य – सयुक्त वाक्य का स्वरूप (समुच्चय बोधक अव्यय), संयुक्त वाक्यों के प्रकार (संयोजक विभाजन, विरोधवाची, परिणामवाची,) संयुक्त वाक्य की रचना–प्रक्रिया, संयुक्त वाक्य रचना के कुछ नियम।

वाक्य संरचना–II

मिश्र वाक्य –1– मिश्र वाक्य की संरचना, मिश्र वाक्य के प्रकार संज्ञा उपवाक्य, (संरचना, संज्ञ उपवाक्य के प्रकार्य, संज्ञा उपवाक्य का संज्ञा पद में रूपान्तरकण, क्रिया रूपों पर प्रतिबन्ध)।

हिन्दी वाक्य संरचना : कुछ विशिष्ट समस्याएँ– वाक्य संरचना संबंधी कुछ समस्या क्षेत्र (सामान्य भूतकाल और ' ने' प्रयोग, भूतकाल के क्रिया रूपों की की रूपरचना; क्रिया के अकर्मक, सकर्मक और द्विकर्मक भेद, अकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना, सकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना), हिन्दी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ (रूप रचना, वाक्य संरचना, द्विकार्यात्मक क्रियाएँ), हिन्दी में वाच्य संरचना, हिन्दी के वाक्यों में अन्विति।

प्रोक्ति स्तर– प्रोक्ति की संकल्पना, संलाप की संकल्पना, संलाप के प्रकार , एकालाप की संकल्पना, एकालाप के प्रकार।

शब्द और अर्थ

हिन्दी की शब्दावली : स्रोतगत अध्ययन– तत्सम, तद्भव अर्थतत्सम, देशज, विदेशी, संकर शब्द; हिन्दी में नव– निर्मित शब्द।

हिन्दी की शब्दावली : अर्थगत अध्ययन – वाचक, लक्षक एवं व्यंजक शब्द और उनके अर्थ, शब्द की अर्थबोधक क्षमता, शब्दों के प्रकारः अर्थ के आधार पर (एकार्थी, अनेकार्थी, समानार्थी, विपरीतार्थक)

शब्द–निर्माण तथा परिभाषिक शब्दावली– शब्द से तात्पर्य, शब्द रचना, (शब्दों के वर्ग; धातु, उपसर्ग और प्रत्यय, समास, संधि), नए शब्दों का निर्माण, पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य, पारिभाषिक शब्द के अभिलक्षण, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की आवश्यकता, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में योगदान देने वाले विद्वान तथा संस्थाएँ, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धान्त, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया (अंगीकरण, अनुकूलन, नवनिर्माण, अनुवाद), पारिभाषिक शब्दावली की जटिलता का प्रश्न, भाषा की प्रवृत्ति के अनुरूप पारिभाषिक शब्दावली का विकास।

मुहावरे तथा लोकोत्तियाँ – 'मुहावरा' शब्द से तात्पर्य, प्रमुख अभिलक्षण, मुहावरों के प्रकार, हिन्दी मुहावरों के स्रोत, 'लोकोक्ति' शब्द से तात्पर्य, प्रमुख अभिलक्षण, लोकोक्तियों के प्रकार, हिन्दी लोकोक्तियों के स्रोत, मुहावरे और लोकोर्क्तियों में अंतर।

हिन्दी का सामाजिक सन्दर्भ

भाषा का सामाजिक सन्दर्भ – भाषा और समाज का सह–संबंध, सामाजिक स्तर भेद और भाषिक विविधता, औपचारिक–अनौपचारिक भाषा प्रयोग, शिष्टाचार एवं विनम्रता का समाजिक संदर्भ।

रिश्ते–नाते की शब्दावली– परिवार और समाज की संकल्पना, हिन्दी की रिश्ते– नाते की शब्दावली, हिन्दी की रिश्ते–नाते की शब्दावली की सांसकृतिक संरचना, रिश्ते–नाते के शब्दों का संबोधन रूप में प्रयोग।

सर्वनाम और संबोधन रूप – सर्वमान : संरचना और प्रयोग, हिन्दी सर्वनामों का सामाजिक सन्दर्भ, सामाजिक आचरण और सर्वनाम प्रयोग, संबोधन शब्दावली : संरचना और प्रयोग, सम्बोधन शब्दावली का सामाजिक सन्दर्भ, सामाजिक आचरण और सम्बोधन प्रयोग।

कोड मिश्रण एवं कोड परिवर्तन – कोड मिश्रण, कोड परिवर्तन, दोनों में अन्तर।

हिन्दी भाषा की शैलियाँ – शैली, समाज और भाषा (शैलियों के प्रकार), प्रमुख शैली भेद और हिन्दी भाषा (क्षेत्रीय सामाजिक, सांस्कृतिक शैली), हिन्दी की साहित्यिक शैलियाँ (हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी) हिन्दी की प्रयोजनमूलक शैलियाँ।

लिपि और वर्तनी

लिपि का विकास और देवनागरी लिपि– भाषा और लिपि का संबंध, लिपि का उद्‌भव और विकास, भारतीय लिपियों का ऐतिहासिक विकास (सैंधव, ब्राह्मी, खरोष्ठी लिपि), ब्राह्मी लिपि से विकसित भारतीय लिपियाँ, देवनागरी लिपि (उद्‌भव एवं विकास)।

देवनागरी लिपि और उसकी विशेषताएँ– देवनागरी का नामकरण वैज्ञानिक लिपि और देवनागरी, देवनागरी लिपि : गुण–दोष, भारतीय संविधान में देवनागरी की स्थिति, देवनागरी लिपि में सुधार, देवनागरी लिपि की सार्थकता।

देवनागरी का मानकीकरण : अन्य भाषाओं के लिए लिपि– चिह्न – देवनागरी–लिपि का मानकीकरण (मानकीकरण से से तात्पर्य, मानकीकरण की आवश्यकता), वर्णों का मानकीकरण, परिवर्धित देवनागरी।

हिन्दी वर्तनी की समस्याएँ– हिन्दी वर्तनी का मूल आधार (उच्चारण), लेखन– वाचन के नियम, वर्तनी सम्बन्धी भूलों के सामान्य कारण।